सीसीई आदर्श प्रश्नपत्र–1

हिंदी : कोर्स 'ए'

द्वितीय सत्र (संकलित परीक्षा-II)

(हल सहित)

कक्षा : दसवीं

निर्धारित समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 90*

सामान्य निर्देश :

(i) इस प्रश्नपत्र के चार खंड हैं–'क', 'ख', 'ग' और 'घ'।

(ii) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमानुसार दीजिए।

खंड 'क'

अपठित गद्यांश

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

भारत के ऋषि-मुनि जानते थे कि प्रकृति जीवन का स्रोत है और पर्यावरण के समृद्ध और स्वस्थ होने से ही हमारा जीवन भी समृद्ध और सुखी होता है। वे प्रकृति की दैवी शक्ति के रूप में उपासना करते थे और उसे 'परमेश्वरी' भी कहते थे। उन्होंने पर्यावरण पर बहुत गहरा चिंतन किया। जो कुछ पर्यावरण के लिए हानिकारक था, उसे आसुरी प्रवृत्ति कहा और जो हितकर था उसे दैवी प्रवृत्ति माना।

भारत के पुराने ग्रंथों में वृक्षों और वनों का चित्रण पृथ्वी के रक्षक वस्त्रों के रूप में किया गया है। उनको संतान की तरह पाला जाता था और हरे-भरे पेड़ों को अपने किसी स्वार्थ के लिए काटना पाप कहा जाता था। अनावश्यक रूप से पेड़ों को काटने पर दण्ड का विधान भी था।

मनुष्य यह समझता है कि समस्त प्राकृतिक संपदा पर केवल उसी का आधिपत्य है। हम जैसा चाहें इसका उपभोग करें। इसी भोगवादी प्रवृत्ति के कारण मानव ने इसका इस हद तक शोषण कर लिया है कि अब उसका अस्तित्व ही संकट में पड़ गया है। वैज्ञानिक बार-बार चेतावनी दे रहे हैं कि प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा करो, अन्यथा मानव जाति नहीं बच पाएगी। भारतीय संस्कृति में वृक्षों की रक्षा के महत्त्व को 'तुलसी' और 'पीपल' के उदाहरणों से समझा जा सकता है। इन जीवनोपयोगी वृक्षों की देवी-देवता के समान ही पूजा की जाती है। पर्यावरण की दृष्टि से वृक्ष को परम रक्षक और मित्र बताया गया है। यह हमें अमृत प्रदान करता है, दूषित वायु को स्वयं ग्रहण करके हमें प्राणवायु देता है, मरुस्थल का नियंत्रक होता है, नदियों की बाढ़ को रोकता है और जलवायु को स्वच्छ बनाता है। इसलिए हमें वृक्षमित्र होकर जीवन-यापन करना चाहिए।

1. भारत के ऋषि-मुनियों के अनुसार जीवन की समृद्धि आधारित है– (1)

(क) प्रकृति के संरक्षण पर। (ख) पर्यावरण की समृद्धि पर।

(ग) अपार धन-संग्रह पर। (घ) असीमित ज्ञान-भण्डार पर।

2. गद्यांश में 'आसुरी प्रवृत्ति' का आशय है _____। (1)

(क) राक्षसी प्रवृत्ति (ख) मानवता की विनाशक प्रवृत्ति

(ग) पर्यावरण के लिए अहितकर प्रवृत्ति (घ) हानिकारक प्रवृत्ति

3. पर्यावरण प्रदूषण का कारण है कि मनुष्य _____। (1)

(क) प्रकृति पर अपना एकाधिकार मानता है (ख) प्रकृति के दोहन के लिए प्रयास करता है

(ग) जीवन की सुखमयता के लिए स्वार्थी हो जाता है (घ) प्रकृति के संरक्षण का प्रयास नहीं करता

4. वृक्ष को सच्चा मित्र मानने का कारण नहीं है _____। (1)

(क) छाया और फल देना (ख) पर्यावरण को शुद्ध रखना

(ग) दूषित वायु को हटाकर प्राणवायु देना (घ) मनुष्य को पवित्रता प्रदान करना

5. तुलसी और पीपल का उदाहरण देकर लेखक क्या बताना चाहता है ? (1)

(क) ये वनस्पतियाँ रोग दूर करती हैं। (ख) उपयोगी वनस्पति को देवता माना जाता है।

(ग) पीपल छायादार पेड़ है। (घ) इन्हें उजाड़ा नहीं जाना चाहिए।

उत्तर– 1. (ख) 2. (ग) 3. (क) 4. (घ) 5. (ख)।

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

प्रकृति ने मानव जीवन को बहुत सरल बनाया है, किन्तु आज का मानव अपने जीवन-काल में ही पूरी दुनिया की सुख-समृद्धि बटोर लेने के प्रयास में उसको जटिल बनाता जा रहा है। इस जटिलता के कारण संसार में धनी-निर्धन, सत्ताधीश-सत्ताच्युत-संतानवान-निस्संतान सभी सुख-शांति की चाह तो रखते हैं, किन्तु राह पकड़ते हैं आह भरने की। मरु-मरीचिका के मैदान में जल की, धधकती आग में शीतलता की चाह रखते हैं। विद्वानों का विचार है कि संसार में सुख का मार्ग है–आत्मसंयम। किन्तु मानव इस मार्ग को भूलकर सांसारिक पदार्थों में, इन्द्रिय विषयों की प्राप्ति में आनंद ढूँढ़ रहा है–परिणामतः दुख के सागर में डूबता जा रहा है। आत्मसंयम का मार्ग अपने में बहुत स्पष्ट है, उसकी उपादेयता किसी भी काल में कम नहीं होती। इन्द्रिय-विषयों का संयम ही आत्मसंयम है। भौतिक पदार्थों के प्रति इन्द्रियों का प्रबल आकर्षण मानवीय दुखों का मूल कारण माना गया हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति के फैलाव से यह आकर्षण तीव्र से तीव्रतर होता जा रहा है। पर ऐसी स्थिति में याद रखना आवश्यक है कि ये भौतिक पदार्थ सुख तो दे सकते हैं, आनंद नहीं। आनंद का निर्झर तो आत्मसंयम से फूटता है। उसकी मिठास अनिर्वचनीय और अनुपम होती है। इस मिठास के सम्मुख धन-सम्पत्ति, सत्ता, सौन्दर्य का सुख, सागर के खारे पानी जैसा लगने लगता है।

1. आज का आदमी जीवन को अधिक जटिल कैसे बना रहा है ? (1)

(क) सुख-शांति की प्राप्ति के प्रयास में

(ख) अपना यश फैलाने की कोशिश में

(ग) दुनिया की सुख-समृद्धि को बटोरने की कोशिश में

(घ) असीमित लालसाओं को पूरा करने की चाह में

2. 'मरु-मरीचिका के मैदान में जल की चाह' का अभिप्राय है _____। (1)

(क) भौतिक पदार्थों में सुख-शांति प्राप्त करना

(ख) उपभोक्तावादी संस्कृति के वातावरण में वैराग्य की बातें करना

(ग) धधकती आग में शीतलता की राह देखना

(घ) धनहीनता की दुनिया में भोग-विलास के सपने सँजोना

3. 'आत्मसंयम' का तात्पर्य है _____। (1)

(क) अपनी आत्मा पर नियंत्रण (ख) अपनी भावनाओं का नियमन

(ग) अपने मन का वशीकरण (घ) इन्द्रियों के विषयों के प्रति आकर्षण पर संयमन

4. गद्यांश के अनुसार भौतिक पदार्थ _____। (1)

(क) सुख दे सकते हैं (ख) आनंद दे सकते हैं

(ग) न सुख दे सकते हैं, न आनंद (घ) सुख दे सकते हैं, आनंद नहीं

5. 'जटिल' शब्द का अर्थ नहीं है _____। (1)

(क) कठिन (ख) पेचीदा

(ग) उलझा हुआ (घ) मैला

उत्तर– 1. (ग) 2. (क) 3. (घ) 4. (घ) 5. (घ)।

अपठित काव्यांश

प्रश्न 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

हरी-हरी वह घास उगाती है
फसलों को लहलहाती है
फूलों में भरती रंग
पेड़ों को पाल-पोसकर ऊँचा करती
पत्ते-पत्ते में रहे ज़िन्दा हरापन
अपनी देह को खाद बनाती है
धरती–इसीलिए माँ कहलाती है।

पानी से सराबोर हैं सब
नदियाँ, पोखर, झरने और समन्दर
ज्वालामुखी हजारों फिर भी
सोते धरती के अन्दर !
जैसा सूरज तपता आसमान में
धरती के भीतर भी दहकता है
गोद में लेकिन सबको
साथ सुलाती है
धरती–इसीलिए माँ कहलाती है।

आग-पानी को सिखाती साथ रहना
हर बीज सीखता इस तरह उगना,
एक हाथ फसलें उगाकर
सबको खिलाती है
दूसरे हाथ सृजन का
सह-अस्तित्व का
एकता का पाठ पढ़ाती है
धरती–इसीलिए माँ कहलाती है।

1. पत्ते-पत्ते को हरा-भरा बनाए रखने के लिए धरती _____। (1)
   (क) सूर्य से धूप लेती है (ख) बादलों से सिंचाई करवाती है
   (ग) अपनी देह को खाद बनाती है (घ) सबके स्वास्थ्य का ध्यान रखती है
2. धरती माँ परस्पर विरोध-भाव रखने वालों को एक साथ रहना कैसे सिखाती है ? (1)
   (क) नदियाँ, पोखर, सागर आदि के द्वारा (ख) ज्वालामुखी के स्वभाव से गरमी कम करके
   (ग) उन्हें पाल-पोस कर बड़ा बनाती है (घ) विरोधियों को संतान के समान गोद में खिलाती है
3. धरती माँ सभी के लिए खाने की व्यवस्था कैसे करती है ? (1)
   (क) खेतों को जोतने लायक बनाकर (ख) फसलें उगाकर
   (ग) अंदर-बाहर की गर्मी से (घ) अपने देह की खाद से
4. कविता में 'सृजन' शब्द का आशय है _____। (1)
   (क) निर्माण (ख) संरचना
   (ग) सृष्टि (घ) फसलें

5. 'सूरज' का पर्यायवाची नहीं है _____। (1)

(क) दिनकर (ख) दिवाकर

(ग) रत्नाकर (घ) प्रभाकर

उत्तर– 1. (ग) 2. (घ) 3. (ख) 4. (ख) 5. (ग)।

प्रश्न 4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

कोटि-कोटि उर-सुर से माता! तेरा सब करते अभिनंदन–
पाप-शाप सब शांत शमन कर, दर्प-द्वेष दुख-दैन्य हवन कर
शांति-त्याग सत-सुन्दर शिव की जले विश्व में जोत निरंतर
कोटि-कोटि उर-सुर से माता! तेरा हम करते अभिनंदन।
स्वर्ग बने मनुजों की संसृति और अखंडित हो यह संस्कृति,
सभी चढ़ें सोपान प्रगति के कहीं न हो जीवन की दुर्गति,
सब के सुख में व्यक्ति सुखी हो, कहीं न हो जन का दुख-क्रंदन
कोटि-कोटि उर-सुर से माता! तेरा सब करते अभिनन्दन।

1. कवि मातृभूमि से किसके विनाश की प्रार्थना कर रहा है ? (1)

(क) मद, मोह एवं लोभ (ख) गर्व, वैर एवं विषाद

(ग) क्रोध, आवेश एवं आक्रोश (घ) पाखण्ड, झूठ एवं पाप

2. कवि विश्व में किस ज्योति की कामना कर रहा है ? (1)

(क) ज्ञान और अध्यात्म की (ख) तमनाशिनी प्रभा की

(ग) सत्यं, शिवं, सुन्दरं की (घ) मानसिक मलिनता के विनाश की

3. 'संसार में कोई दुखी न हो' प्रार्थना का भाव किस पंक्ति में निहित है ? (1)

(क) 'सबके सुख में व्यक्ति सुखी हो' (ख) 'सभी चढ़ें सोपान प्रगति के'

(ग) 'पाप-शाप सब शांत-शमन कर' (घ) 'कहीं न हो जन का दुख-क्रंदन'

4. 'सबके सुख में व्यक्ति सुखी हो'–पंक्ति का आशय है _____। (1)

(क) संसार में सभी प्राणी सुखी हों

(ख) विश्व में मानवता की ज्योति जगे

(ग) व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सुख में विकल हो जाए

(घ) प्रत्येक व्यक्ति दूसरों के सुख को अपना सुख माने

5. 'दर्प-द्वेष-दुख-दैन्य' में अलंकार है _____। (1)

(क) यमक (ख) श्लेष

(ग) उपमा (घ) अनुप्रास

उत्तर– 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (घ) 5. (घ)।

खंड 'ख'

व्यावहारिक व्याकरण

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए– (5 × 1 = 5)

(क) <u>हम</u> कल मुंबई जाएँगे।

(ख) मैं <u>हँस रहा था</u>।

(ग) गरिमा <u>छठी</u> कक्षा में पढ़ती है।

(घ) तुलसीदास रामभक्त थे।

(ङ) गाँधीजी ने सत्य-अहिंसा का मार्ग दिखाया।

उत्तर– (क) **हम**–उत्तमपुरुषवाचक सर्वनाम, बहुवचन, पुल्लिंग कर्ताकारक।

(ख) **हँस रहा था**–अकर्मक क्रिया, संयुक्त क्रिया, भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन।

(ग) **छठी**–निश्चित संख्यावाचक विशेषण, क्रमसूचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'कक्षा' विशेष्य का विशेषण।

(घ) **तुलसीदास**–व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग कर्ताकारक।

(ङ) **गाँधीजी**–व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक।

प्रश्न 6. निर्देशानुसार कीजिए– (5 × 1 = 5)

(क) जब मैं आगरा पहुँचा वर्षा हो रही थी। (वाक्य-भेद बताइए)

(ख) डॉक्टर आया और मरीज़ ठीक हो गया। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताइए)

(ग) स्कूल की घंटी बजी। प्रार्थना शुरू हो गई। (एक सरल वाक्य बनाइए)

(घ) गिलास तोड़ने वाला बालक खड़ा हो जाए। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ङ) वह संस्कृत पढ़ने गुरुजी के पास गया है। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर– (क) मिश्र वाक्य

(ख) संयुक्त वाक्य

(ग) स्कूल की घंटी बजते ही प्रार्थना शुरू हो गई।

(घ) जिस बालक ने गिलास तोड़ा है, वह खड़ा हो जाए।

(ङ) उसे संस्कृत पढ़नी थी और वह गुरुजी के पास गया है।

प्रश्न 7. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए– (5 × 1 = 5)

(क) माली ने पौधे लगाए। (कर्मवाच्य में)

(ख) प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटन किया गया। (कर्तृवाच्य में)

(ग) मैं चल नहीं सकता। (भाववाच्य में)

(घ) सरकार के द्वारा सूचित किया गया। (वाच्य बताइए)

(ङ) मैं इस पुस्तक को पढ़ूँगा। (वाच्य बताइए)

उत्तर– (क) माली द्वारा पौधे लगाए गए।

(ख) प्रधानमंत्री ने उद्घाटन किया।

(ग) मुझसे चला नहीं जाता।

(घ) कर्मवाच्य

(ङ) कर्तृवाच्य

प्रश्न 8. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में अलंकार बताइए– (5 × 1 = 5)

(क) मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के

(ख) मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों।

(ग) रघुपति राघव राजा राम

(घ) तब तो बहता समय शिला-सा जम जाएगा

(ङ) ताहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भर छाछ पर नाच नचावैं

उत्तर– (क) मानवीकरण अलंकार

(ख) रूपक अलंकार

(ग) अनुप्रास अलंकार

(घ) उपमा अलंकार

(ङ) अनुप्रास अलंकार

खंड 'ग'

प्रश्न 9. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गये प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

हमने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना ज़रूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं। इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबन्दी नहीं थी बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िन्दगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालों को हमारे इस परम्परागत 'पड़ोस कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

1. लेखिका के भाइयों की गतिविधियों का दायरा घर के बाहर था, क्योंकि– (1)

(क) उनकी गतिविधियाँ घर में सम्पन्न नहीं हो सकती थीं।

(ख) पतंग और गिल्ली-डंडा का खेल घर से बाहर का था।

(ग) घर से बाहर उनकी गतिविधियों पर कोई नियंत्रण नहीं था।

(घ) पारिवारिक परम्परा के अनुसार पुरुष को बाहर जाने की स्वतंत्रता थी।

2. लेखिका की सीमा घर ही क्यों थी ? (1)

(क) लड़कियाँ डरपोक स्वभाव के कारण घर की सीमा में ही रहती थीं।

(ख) घर से बाहर का वातावरण उनके लिए असुरक्षित था।

(ग) समाज में लड़कियों का बाहर जाना ठीक नहीं माना जाता था।

(घ) पारिवारिक परम्परा के अनुसार यही नियम था।

3. 'उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले में फैली रहती थीं' वाक्य का आशय है– (1)

(क) घर और पड़ोसी के बीच में कोई विभाजक दीवार नहीं थी।

(ख) पूरा मोहल्ला एक-दूसरे के सुख-दुख का हिस्सेदार था।

(ग) आपसी प्रेमभाव के कारण पूरे मोहल्ले में पारिवारिक सम्बन्ध थे।

(घ) परम्परागत 'पड़ोस कल्चर' पड़ोसी को भी परिवार का सदस्य मानती थी।

4. परम्परागत 'पड़ोस कल्चर' से विच्छिन्न होने का परिणाम है– (1)

(क) हम फ्लैटों में रहने लगे हैं। (ख) पारस्परिक प्रेमभाव क्षीण हो गया है।

(ग) सामाजिकता घट गई है। (घ) हम असहाय, असुरक्षित और संकुचित हो गए हैं।

5. 'हमने गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने का काम भी किया।' वाक्य का प्रकार है– (1)

(क) सरल वाक्य (ख) मिश्र वाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य (घ) दीर्घ वाक्य

उत्तर– 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (घ) 5. (ग)।

अथवा

इस देश की वर्तमान शिक्षा-प्रणाली अच्छी नहीं। इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे उस प्रणाली का संशोधन करना या कराना चाहिए, खुद पढ़ने-लिखने को दोष न देना चाहिए। लड़कों ही की शिक्षा-प्रणाली कौन-सी बड़ी अच्छी है। प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह राय दी है कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ ? आप खुशी से लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा की प्रणाली का संशोधन कीजिए। उन्हें क्या पढ़ाना चाहिए, कितना पढ़ाना चाहिए, किस तरह की शिक्षा देनी चाहिए और कहाँ पर देनी चाहिए–घर में या स्कूल में–इन सब बातों पर बहस कीजिए, विचार कीजिए, जी में

आए सो कीजिए; पर परमेश्वर के लिए यह न कीजिए कि स्वयं पढ़ने-लिखने में कोई दोष है--वह अनर्थकर है, वह अभिमान का उत्पादक है, वह गृह-सुख का नाश करने वाला है। ऐसा कहना सोलहों आने मिथ्या है।

1. कुछ लोगों के अनुसार स्त्री शिक्षा के अनर्थकर होने का एक संभावित कारण है– (1)

(क) शिक्षित स्त्री का स्वतंत्र होना। (ख) शिक्षित स्त्री द्वारा पुरुष की बराबरी करना।
(ग) शिक्षित स्त्री द्वारा परिवार की उपेक्षा करना। (घ) वर्तमान शिक्षा प्रणाली।

2. यदि देश की शिक्षा-प्रणाली अच्छी न हो तो हमें– (1)

(क) स्त्रियों को पढ़ाना-लिखाना नहीं चाहिए। (ख) स्कूल-कॉलेजों को बंद कर देना चाहिए।
(ग) लड़कियों को घर पर ही पढ़ाना चाहिए। (घ) शिक्षा-प्रणाली में बदलाव लाना चाहिए।

3. लेखक ने किसको 'सोलह आने मिथ्या' कहा है ? (1)

(क) स्कूल-कॉलेज की शिक्षा को (ख) शिक्षा प्रणाली के संशोधन को
(ग) सुधारकों के प्रयासों को (घ) स्त्री-शिक्षा को अनर्थकर मानने को

4. 'किसी ने यह राय दी कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ'–वाक्य का प्रकार है– (1)

(क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य
(ग) मिश्र वाक्य (घ) साधारण वाक्य

5. 'सोलहों आने' मुहावरे का अर्थ है– (1)

(क) एकदम खरा (ख) परम पवित्र
(ग) पूरी तरह (घ) प्रतिभायुक्त

उत्तर– 1. (घ) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ग)।

प्रश्न 10. बिस्मिल्ला खाँ को मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा जाता है ? (4)

उत्तर–बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक इसलिए कहा जाता है क्योंकि शहनाई तो स्वयं में ही मंगलकारी वाद्य है। इसे मांगलिक अवसरों पर बजाया जाता है। अब तक जितने शहनाईवादक हुए हैं उनमें उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का नाम सर्वोपरि है। उन्हें नायक की उपाधि प्राप्त है। उन्होंने अनेक मांगलिक अवसरों पर मंगलध्वनि की है। यहाँ तक कि भारत के प्रथम स्वतंत्रता दिवस पर तथा प्रथम गणतंत्र दिवस पर उन्हें ही शहनाई की मंगलध्वनि करने का अवसर प्राप्त हुआ था और इसके लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उनसे अनुरोध किया था। बिस्मिल्ला खाँ शहनाई की मंगलकारी ध्वनि के नायक ही थे।

प्रश्न 11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए– (3 × 2 = 6)

(क) **आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है ? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे ?**

उत्तर–आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज मानी जाती है क्योंकि आग की खोज ने मनुष्य की जीवन-शैली को पूरी तरह बदल डाला। आग की खोज से पहले घरों में चूल्हा नहीं जलता था। अब यही आग मनुष्य के भोजन को पकाने के काम आती है।

आग की खोज के पीछे प्रेरणा के मुख्य स्रोत थे–
– पेट की ज्वाला को शांत करना।
– प्रकाश पाने की प्रेरणा।
– गर्मी पाने की प्रेरणा।
आग के आविष्कार से मनुष्य शीत के प्रभाव से बच सका।

(ख) **उत्तररामचरित, त्रिपिटक, गाथासप्तशती और सेतुबंध किस भाषा में रचे गए ?**

उत्तर–उत्तररामचरित, त्रिपिटक, गाथासप्तशती और सेतुबंध प्राकृत भाषा में रचे गए। उस जमाने में प्राकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी। प्राकृत बोलना और लिखना अपढ़ होने का सबूत नहीं थी।

(ग) **'एक कहानी यह भी' की लेखिका के पिताजी के व्यक्तित्व की चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**

उत्तर–लेखिका के पिताजी की चार विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

– लेखिका के पिताजी कांग्रेस के साथ-साथ समाज सुधार के कार्यों से जुड़े हुए थे।

– वे विद्यार्थियों को अपने घर पर रखकर पढ़ाते थे। वे दरियादिल इंसान थे।

– वे सदा शीर्ष स्थान पर बने रहना चाहते थे। वे महत्त्वाकांक्षी थे।

– वे अत्यधिक क्रोधी स्वभाव के थे। माँ उनके क्रोध का सर्वाधिक शिकार बनती थी।

प्रश्न 12. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए– (5 × 1 = 5)

लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा॥
अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी॥
नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू॥
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा॥

(क) **लक्ष्मण ने परशुराम पर क्या व्यंग्य किया ?**

(ख) **लक्ष्मण के व्यंग्यमय शब्दों से परशुराम के व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषताएँ अभिव्यक्त हुई हैं ?**

(ग) **परशुराम द्वारा गाली देना उनको शोभा क्यों नहीं देता ?**

(घ) **'रिस रोकि' में किस अलंकार का प्रयोग है ?**

(ङ) **इस काव्यांश की भाषा का नाम लिखिए।**

उत्तर–(क) लक्ष्मण ने परशुराम पर यह व्यंग्य किया कि उनके सुयश को तो सारा संसार जानता है, तब अपने मुँह से उसका वर्णन करना कहाँ तक शोभा देता है।

(ख) लक्ष्मण के व्यंग्यमय वचनों से परशुराम के व्यक्तित्व के बारे में पता चलता है कि वे बड़बोले तथा क्रोधी स्वभाव के थे।

(ग) परशुराम को गाली देना इसलिए शोभा नहीं देता क्योंकि वे वीर हैं। उन्हें संयमी होना चाहिए।

(घ) अनुप्रास अलंकार

(ङ) अवधी भाषा

अथवा

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के

(क) **माँ ने बेटी को चेहरे पर रीझने के लिए मना क्यों किया है ?**

(ख) **'आग रोटियाँ सेंकने के लिए है जलने के लिए नहीं' आशय समझाइए।**

(ग) **स्त्री जीवन के बंधन किन्हें कहा है और क्यों ?**

(घ) **आपकी दृष्टि में क्या माँ की सीख समयानुकूल है ?**

(ङ) **कवि और कविता का नाम लिखिए।**

उत्तर–(क) माँ ने बेटी को चेहरे पर रीझने के लिए इसलिए मना किया है क्योंकि प्राय: बेटियाँ अपने चेहरे की सुंदरता पर रीझकर अपने बारे में गलतफहमी पाल लेती हैं और शोषण का शिकार बन जाती हैं।

(ख) आग का सही उपयोग खाना बनाने में होता है। स्वयं को आग में जलाकर मारना आग का दुरुपयोग है। जलकर मरना पाप है।

(ग) वस्त्र और आभूषणों को स्त्री जीवन के बंधन कहा है। इसका कारण यह है कि इन चीजों के लोभ में स्त्री शोषण और दासता को सहज स्वीकार कर लेती है।

(घ) हाँ, हमारी दृष्टि में माँ की सीख समयानुकूल है। बेटी को विवाह के बाद विदा करते समय ऐसी ही सीख की आवश्यकता होती है।

(ङ) **कवि का नाम**–ऋतुराज, **कविता का नाम**–कन्यादान

प्रश्न 13. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए– (2 × 5 = 10)

(क) **'छाया मत छूना' कविता में दुख के कारण क्या बताए गए हैं ?**

उत्तर–कविता में व्यक्त दुख के कारण–

– 'छाया' अर्थात् बीती हुई मधुर यादों को याद करके हम वर्तमान को दुखी बना लेते हैं।
– अपने सपनों के पूरा न होने पर हम दुखी होते हैं।
– हम प्रभुता की मृगतृष्णा में उलझकर रह जाते हैं। पर यह छलावा सिद्ध होता है और दुख का कारण बन जाता है।
– दुविधाग्रस्त मनोदशा भी हमारे दुख का कारण बनती है। ऐसी स्थिति में मनुष्य कोई निर्णय नहीं ले पाता।
– अवास्तविक स्थिति में रहना। जीवन के कठोर यथार्थ की अनदेखी करना।
– यह न समझना कि हर सुख में एक दुख छिपा रहता है।

(ख) **संगतकार किसे कहते हैं ? वह मुख्य गायक की किन-किन रूपों में मदद करता है ?**

उत्तर–संगतकार उसे कहते हैं जो कि गायन के समय मुख्य गायक की मदद करता है।

संगतकार निम्नलिखित रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं–

– वह मुख्य गायक-गायिकाओं के ऊँचे स्वर में अपना स्वर मिलाते हैं। इससे उनकी आवाज़ को बल मिलता है।
– जब मुख्य गायिका-गायिका अंतरे की जटिल तानों में खो जाते हैं तब वह स्थायी को सँभाले रहता है।
– जब गायक-गायिका सुर से भटक जाते हैं तब संगतकार उन्हें सही सुर में वापस लाता है।
– तारसप्तक में जब गायक-गायिकाओं का स्वर बिखरने लगता है कि तब संगतकार अपना स्वर मिलाकर सुर को सँभाल लेता है।
– वह मुख्य गायक को अकेलेपन का अहसास नहीं होने देता।
– वह गायक-गायिका के पीछे छूटे हुए सामान को समेटता है।

(ग) **'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है' से किस प्रकार जीवन-सत्य का बोध होता है ?**

उत्तर–इस काव्य-पंक्ति से इस जीवन-सत्य का बोध होता है कि हर सुख में दुख भी छिपा रहता है। सुखों पर दुख की अदृश्य छाया मँडराती रहती है। अतः हमें सुख के साथ दुख को भी स्वीकारने को तैयार रहना चाहिए।

(घ) **परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए क्या-क्या तर्क दिए ?**

उत्तर–परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए–

– बचपन में हमने ऐसे अनेक धनुष तोड़े, पर आपने तब कोई क्रोध नहीं किया। इसी धनुष पर आपकी विशेष ममता क्यों है ?
– हमारी नज़र में तो सभी धनुष एक-समान होते हैं। इस धनुष पर इतना हो-हल्ला क्यों ?
– राम ने तो इसे नए के भ्रम में देखा था।
– यह धनुष तो राम के छूते ही टूट गया। अतः इसमें उनका कोई दोष नहीं है। आप अकारण ही क्रोध प्रदर्शित कर रहे हैं।

(ङ) **माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही थी ?**

उत्तर–माँ को अपनी बेटी अंतिम पूँजी इसलिए लग रही थी क्योंकि वह उसके सुख-दुख की साथी थी। दोनों मिलकर सुख-दुख बाँटती थीं। उसके जाने के बाद माँ को ऐसा लग रहा था कि उसकी अंतिम पूँजी भी चली गई। इसके बाद वह अपने मन की बात किसी के साथ नहीं कर पाएगी।

प्रश्न 14. 'साना साना हाथ जोड़ि' पाठ में बताया गया है कि पहाड़ों में बच्चों के लिए स्कूल न के बराबर हैं। इन बच्चों को दूर तक पैदल चलकर स्कूल जाना पड़ता है तथा शाम को अपनी माँओं के साथ भारी काम करने पड़ते हैं

आपकी दृष्टि से क्या बच्चों के साथ अन्याय नहीं हो रहा है ? उन्हें क्या सुविधाएँ मिलनी चाहिए ?

(मूल्य आधारित प्रश्न) (4)

उत्तर–पहाड़ी क्षेत्रों में बच्चों के स्कूल बहुत कम हैं। पढ़ने के लिए उन्हें नीचे तराई के स्कूल तक काफी पैदल चलकर जाना पड़ता है। इसमें वे काफी थक जाते हैं। इसके साथ-साथ उनका बचपन भी छीना जा रहा है। उन्हें खेलने-कूदने का अवसर मिल ही नहीं पाता। शाम को घर लौटने पर उन्हें अपनी माँ के साथ मवेशी चराने, पानी भरने तथा जंगल से लकड़ियाँ काटने के श्रम साध्य काम भी करने पड़ते हैं। इसका कारण उनकी अत्यधिक गरीबी है

हमारी दृष्टि में यह बच्चों के साथ घोर अन्याय है। उन्हें अपने गाँव में ही पढ़ने की सुविधा मिलनी चाहिए। उन्हें खेलने के साधन और अवसर भी मिलने चाहिए ताकि उनका सर्वांगीण विकास हो सके। उनसे काम करवाना 'बाल-मजदूरी' के अंतर्गत आता है। इसे तुरंत रोका जाना चाहिए। यह कानूनी दृष्टि से भी गलत है। उन्हें पढ़ने और खेलने की सुविधाएँ उपलब्ध कराना सरकार और समाज की जिम्मेदारी है।

प्रश्न 15. किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए– (2 × 3 = 6)

(क) **'मैं क्यों लिखता हूँ ?' प्रश्न का लेखक ने क्या उत्तर दिया है ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।**

उत्तर–इस प्रश्न का उत्तर लेखक ने यह दिया है कि चार बातें उसे लिखने के लिए प्रेरित करती हैं–

– संपादक का आग्रह
– प्रकाशक का तकाजा
– आर्थिक आवश्यकता
– भीतरी प्रेरणा

(ख) **दुलारी का टुन्नू से पहली बार परिचय कहाँ और किस रूप में हुआ ?**

उत्तर–दुलारी का टुन्नू से पहली बार परिचय पिछली तीज के अवसर पर हुआ था। दुलारी खोजवाँ बाज़ार में गाने गई थी। वहीं विपक्ष की ओर से टुन्नू आया हुआ था। वह 16-17 वर्ष का लड़का था। उसे बजरडीहा वालों ने बुलाया था। वहीं काव्यात्मक प्रश्नोत्तर के रूप में उसका परिचय टुन्नू से हुआ था। दोनों गायक थे।

(ग) **झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक लेखिका को किस तरह सम्मोहित कर रहा था ?**

उत्तर–लेखिका को गंतोक झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया हुआ प्रतीत हो रहा था। आसमान में तारे बिखरकर टिमटिमा रहे थे। दूर.....ढलान लेती हुई तराई पर सितारों के गुच्छे रोशनियों की एक झालर-सी बना रहे थे। यह रहस्यमयी सितारों भरी रात लेखिका में सम्मोहन जगा रही थी। उसे यह सब जादू भरा प्रतीत हो रहा था।

(घ) **सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन-किन लोगों का योगदान होता है, उल्लेख कीजिए।**

उत्तर–सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव कराने में निम्नलिखित लोगों का योगदान होता है–

– गाइड का
– ड्राइवर का
– स्थानीय निवासियों का
– वहाँ काम करने वालों का।

खंड 'घ'

प्रश्न 16. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर किसी एक विषय पर 100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए– (5)

(क) **बढ़ता हुआ यातायात**

- यातायात का जीवन में महत्व
- बढ़ते हुए साधन
- साधनों के प्रकार
- लाभ-हानि

(ख) **अपनी भाषा**

- अपनी भाषा का महत्त्व
- सामाजिक व्यवहार में उसकी उपयोगिता
- अपनी भाषा की सेवा और विकास के उपाय

(ग) **वर्षा का वह एक दिन.....**

- दिन का स्मरण
- वर्षा का आगमन
- वर्षा का असली रंग

उत्तर–

(क) बढ़ता हुआ यातायात

यातायात का जीवन में बहुत महत्त्व है। यातायात के माध्यम से ही हम एक स्थान से दूसरे स्थान तक आते-जाते हैं। पर अब यातायात के साधन निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। बैलगाड़ी युग से बाहर निकलकर अब मानव रॉकेट युग में पहुँच गया है। हवाई जहाज, रेलगाड़ी, बस एवं मोटर कार, मोटरसाइकिल, स्कूटर, साइकिल आदि यातायात के विविध साधन हैं। ज्यों-ज्यों लोगों के पास धन बढ़ता जा रहा है, त्यों-त्यों यातायात के साधन भी बढ़ते जा रहे हैं। अब तो स्थिति यह है कि एक घर में ही दो-तीन कारें हैं। बड़ी-बड़ी कोठियों में तो 7-8 कारों का होना सामान्य सी बात है। घर का प्रत्येक सदस्य अकेला अपनी गाड़ी में जाता है। इससे सड़कों पर यातायात बढ़ता जा रहा है। इस बढ़ते यातायात के साधनों ने सड़कों पर जाम की स्थिति उत्पन्न कर दी है। बड़े-बड़े शहरों में तो यातायात चलता नहीं, रेंगता है। दिल्ली में मेट्रो ट्रेन चलने के बावजूद सड़कों पर जाम लगा रहता है। यदि लोग आपस में पूल बनाकर दफ्तर जाएँ तो इस समस्या से थोड़ी राहत अवश्य मिल सकती है। इस बढ़ते यातायात ने पार्किंग की समस्या भी उत्पन्न कर दी है। इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक सोचना होगा।

(ख) अपनी भाषा

भाषा के कई रूप होते हैं–मातृभाषा, सम्पर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, विदेशी भाषा। वैसे मातृभाषा को अपनी भाषा कहना उपयुक्त रहेगा। अपनी भाषा का विशेष महत्त्व होता है। अपनी भाषा में व्यक्ति अपने मन के विचारों की सहज अभिव्यक्ति कर सकता है। अपनी भाषा सहज ही आ जाती है। इसे सीखने के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं होती। सामाजिक व्यवहार में भी अपनी भाषा की उपयोगिता है। विदेशी भाषा के सहारे सामाजिक व्यवहार सहज नहीं रह पाता। प्रायः यह देखा जाता है कि व्यक्ति अत्यधिक शिष्ट बनने के चक्कर में अंग्रेजी से वार्तालाप शुरू करता है पर थोड़ी देर बाद ही वह अपनी भाषा में बोलने लगता है। इससे पता चलता है कि एक-दूसरे के साथ बातचीत में अपनी भाषा अधिक सार्थक एवं उपयोगी रहती है। हमें अपनी भाषा की सेवा करने के हरसंभव उपाय करने चाहिए। इसे प्रयोग करते समय किसी प्रकार की हीनता का अनुभव नहीं करना चाहिए। अपनी भाषा का विकास करना हमारा कर्तव्य है। हमें अपनी भाषा में रचनाएँ करनी चाहिए तथा पुस्तकें पढ़नी एवं खरीदनी चाहिए।

(ग) वर्षा का वह एक दिन.....

मुझे अभी तक वह दिन भली-भाँति स्मरण है जब ग्रीष्म ऋतु के प्रकोप से सारा वातावरण तप्त हो रहा था और सभी लोग आकाश की ओर निहार रहे थे कि मेघ जल बरसा दें। पशु-पक्षी भी त्राहि-त्राहि कर उठे थे। तभी आकाश में बादल घुमड़ने लगे। अचानक वर्षा रानी अपने दल-बल सहित धरतीवासियों के कष्ट का निवारण करने आ पहुँची। देखते-देखते काले-काले बादलों ने आकाश पर अपना अधिकार जमा लिया। इन बादलों ने सूर्य देवता को पार्श्व में धकेल दिया। संभवतः इसी स्थिति को देखकर गोस्वामी तुलसीदास ने कहा होगा–

वर्षा काल मेघ नभ छाए। गरजत लागत परम सुहाए॥

आकाश में बिजली चमकने लगी और वर्षा रानी ने छम-छम करके अपना नृत्य प्रारंभ कर दिया। वर्षा की बूँदों का स्पर्श पाकर सभी स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े उल्लसित हो उठे। रिमझिम-रिमझिम करके पानी बरसने लगा। नदी-नालों, तालाबों और कुओं में पानी भरने लगा। 'बरसि-बरसि जल भरहि तलावा' वाली स्थिति उत्पन्न हो गई। वर्षा आया जानकर पपीहे और मोर अपनी-अपनी बोलियाँ बोलने लगे। बागों में मोर नाचने लगे। तालाबों में मेंढक टर्राने लगे। धीरे-धीरे धरती की प्यास बुझ रही थी और प्यासी धरती जल पाकर तृप्त होती जान पड़ रही थी।

एक घंटे बाद इस वर्षा ने अपना असली रंग दिखाना प्रारंभ कर दिया। अब तो मूसलाधार वर्षा होने लगी। ऐसा लगा कि मानो इंद्र देवता सारी कमी एक ही बार में पूरी कर देना चाहते हैं। घर से बाहर निकलना कठिन हो गया। यह स्थिति लगभग दो घंटे तक बनी रही। इन दो घंटों में चारों ओर पानी-ही-पानी दिखाई दे रहा था। इतनी घनघोर वर्षा मैंने पहली बार देखी थी। सभी नालियाँ पानी से भर गईं तथा गली-सड़कों पर पानी-ही-पानी हो गया। ऐसा लगने लगा कि बाढ़ ही आ गई है। कई घरों की छतें टपकने लगीं तथा कई कच्चे घर गिर पड़े। उनके लिए वर्षा दुखदायी हो गई थी। वैसे सामान्यतः लोग इस वर्षा से प्रसन्न थे।

प्रश्न 17. प्रायः अस्वस्थ रहने वाली छोटी बहिन को पत्र लिखकर उसके स्वास्थ्य की जानकारी प्राप्त कीजिए और उसे स्वस्थ रहने के कुछ उपयोगी सुझाव भी दीजिए। (5)

उत्तर–

5/26 ए, नया ब्लॉक,
प्रशांत विहार, नई दिल्ली।

दिनांक.....

प्रिय बहन अंजू

शुभाशीष।

कल माताजी का पत्र प्राप्त हुआ। पत्र पढ़कर ज्ञात हुआ कि आजकल तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा है। इस समाचार ने मुझे चिंतित कर दिया है। आशा है तुम डॉक्टर के परामर्श के अनुसार ठीक प्रकार से दवाएँ ले रही होगी। खाने-पीने का भी पूरा ध्यान रखना है।

मैं स्वस्थ रहने के कुछ उपाय लिख रहा हूँ। आशा है, तुम उन्हें अपनाओगी।

–प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व ही बिस्तर त्याग दो। नित्यकर्म से निवृत्त होकर सैर करने जाया करो। पार्क में 15-20 मिनट का व्यायाम-प्राणायाम तुम्हें बहुत लाभ पहुँचाएगा।

–घर लौटकर नहा-धोकर संतुलित एवं पौष्टिक नाश्ता करो। इसके बाद अपनी दवाएँ नियमित रूप से लो।

–दवा लेने के बाद एक घंटा पूर्ण विश्राम करो।

–अपनी सोच को सकारात्मक बनाए रखो। किसी भी प्रकार का वहम हानिकारक होता है।

तुम मुझे एक सप्ताह बाद पत्र लिखकर अपने स्वास्थ्य की प्रगति से सूचित करना। एक सप्ताह में ही तुम अपने स्वास्थ्य में काफी सुधार पाओगी।

माताजी को सादर-प्रणाम।

तुम्हारा शुभचिंतक भाई
अनिल कुमार

अथवा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के प्रकाशन विभाग के प्रबंधक को पत्र लिखकर उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की बाज़ार में अनुपलब्धि के प्रति उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए।

उत्तर–

सेवा में
प्रबंधक, (प्रकाशन विभाग)
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
हौज़खास, नई दिल्ली।

विषय–दसवीं कक्षा की पुस्तकों की अनुपलब्धि

महोदय,

आपके प्रकाशन विभाग द्वारा दसवीं कक्षा की प्रायः सभी पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। पर बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि अधिकांश पुस्तकें बाजार में उपलब्ध नहीं हैं। छात्र बार-बार पुस्तक-विक्रेताओं के पास जाते हैं तो उनका एक ही उत्तर होता है कि एन.सी.ई.आर.टी. से पुस्तकें मिल ही नहीं पातीं अथवा माँग की तुलना में बहुत कम पुस्तकें मिलती हैं। इससे विद्यार्थियों की पढ़ाई पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

संभवतः आपके विभाग के कार्यों में तालमेल का अभाव है अथवा वहाँ के कर्मचारी लापरवाह हैं। शिक्षा-सत्र को प्रारंभ हुए दो मास बीत गए हैं और अभी तक पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। यह स्थिति चिंताजनक है।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि पुस्तकों को पर्याप्त मात्रा में प्रकाशित कर वितरण की उचित व्यवस्था कराएँ।

सधन्यवाद,

भवदीय

अतुल अग्निहोत्री

(दसवीं कक्षा का एक विद्यार्थी)

दिनांक.....